श्री शत्रुंजय - मुक्ति सम्यग्ज्ञान अभ्यासक्रम

प्रथम वर्ष - अभ्यास - ३

अगस्त-.२०२१

गुणांक - १००

प्रश्न - पत्र

सूचना : १. नाम और एनरोलमेंट नंबर बिना का पेपर रद्द किया जायेगा । २. लाल स्याही के पेन का उपयोग न करें । ३. समझ में न आये ऐसे अक्षरों वाले जवाब पत्र जांचे नहीं जायेंगे । ४. जवाब पत्र में ही योग्य खाने में जवाब लिखना है, साथ में दूसरा पेपर जोडना नहीं है, जोडने पर तीन मार्क्स काट लिये जायेंगे । ५. जवाब पत्र हर महिने की ता. २५ तक भेजना जरुरी है, आगे-पीछे आए पेपर जांचे नही जायेंगे । ६. सभी जवाब अभ्यासक्रम के आधार पर ही लिखना है । ७. जिस महिने का प्रश्न पत्र है, उसके बाद के महिने की २५ ता. को आपके मार्क्स तथा सही उत्तर इन्टरनेट पर दे दिये जायेंगें, उसके बाद आए हुये उत्तर पत्र स्वीकृत नहीं होंगे तथा फोन पर जवाब नहीं दिया जायेगा । ८. उत्तर पत्र में अभ्यासक्रम का नंबर लिखना जरुरी है ।

प्रश्न नं. १ रिक्त स्थान की पूर्ति करो - २०

१. अनमोल ..... सिर्फ जीने के लिये नहीं मिला अपितु औरों को भी जीवन देने के लिये मिला है ।
२. ज्ञान दर्शन चारित्र की ..... रुप जिन मंदिर के चारों और घूमकर तीन प्रदक्षिणा देना ।
३. गुणीजनों के गुणों की ..... करने से ही अपने जीवन में गुण प्रगट होते हैं ।
४. पुद्गलास्तिकाय ..... स्वभाव वाला है ।
५. ..... में दिन प्रति दिन समस्त पदार्थो की वर्णादि गुणों की वृद्धि होती है ।
६. श्री ..... प्रभु पहले के तीसरे भव में जंबु महाविदेह में महाबल राजा थे ।
७. जिनपूजा में द्रव्य ..... से उपार्जन किया हुआ ही वापरना ।
८. लज्जा याने लाज ..... मर्यादा दाक्षिण्यता ।
९. प्रत्येक वनस्पतिकाय ..... ही है ।
१०. धर्म जीव को ..... में से परमार्थ की और ले जाता है ।
११. शीत वस्तु का उष्ण प्रकाश वह ..... है ।
१२. जीव जहाँ जाता है वहाँ प्रथम ..... ग्रहण करता है ।
१३. मुकुट आदि आभुषण चढाते समय ..... का चिंतन करना ।
१४. जीव जिस तरह शक्ति का ..... है उसी तरह अजीव में भी महा शक्ति भरी हुई है ।
१५. अनादि काल से हमारी आत्मा के साथ अनेक ..... जुडे है ।
१६. जैन शास्त्रों के पास भी काल की गिनती की स्वंय की विशेष ..... पद्धति है ।
१७. चैत्यवंदन करते वक्त शरीर के ..... का त्याग करके हाथ जोडकर रहना ।
१८. सत् का संग हमें ..... एवं संत बनाता है ।
१९. ज्ञानी भगवंत हमारी इस भ्रमणा को दूर करते हुए हमारे चारों ओर ..... की हाजरी बताते है ।
२०. धर्मश्रवण से ही ..... आठवें देवलोक में पहुंचे ।

प्रश्न नं. २ एक शब्द में जवाब लिखो - १५

१. अस्तिकाय याने क्या ?
२. किस आरे में युगालिक धर्म नहीं होता ?
३. श्री संभवनाथ प्रभु के शासन रक्षक यक्ष कौन थे ?
४. धर्म का मूल क्या है ?
५. अन्य दर्शन प्रकाश के अभाव को क्या कहते हैं ?
६. संघ भक्ति करके किसने तीर्थंकर नाम कर्म बांधे ?
७. हम सबको चलने में कौन सहायक बनता है ?
८. मन से परमात्मा की बात सुनना बुद्धि का कौनसा गुण है ?
९. स्कंध के साथ जुडा हुआ स्कंध का छोटे से छोटा अविभाज्य सूक्ष्म अणु वह क्या कहलाता है ?
१०. गुण और गुणवानो के प्रति राग हमें कैसा बनाता है ?
११. श्री सुपार्श्वनाथ प्रभु किस नगरी में केवलज्ञान पाये ?
१२. भूत भविष्य वर्तमान काल क्या कहलाता है ?
१३. समाज प्रिय प्राणी कौन है ?
१४. जयवीयराय बोलने से कौन सी मुद्रा होती है ?
१५. विशेषरुप से जानना और विवेकपूर्ण वर्ताव करना उसे क्या कहते है ?

प्रश्न नं. ३ नीचे दिये गये शब्दों के अर्थ लिखो - १०

१. दीहा २) नायव्वा ३) फासा ४) आणपाण ५) अेग ६) साहारण ७) अज्जीवा ८) तहेव
९. चेव १०) पख्खा ११) पत्ताणि १२) मणे १३) सत्तहुतरी १४) अदिस्सा १५) वरिसाय
१६. चलण १७) गूढ १८) पतेय १९) खंधा २०) पभा

प्रश्न नं. ४ जोडियाँ लगाओ (सिर्फ 'B' के नंबर लिखो) - १०

A	B	A	B
१) कालचक्र	१) सद्गति के द्वार	६) अर्थालंबन	६) बारह आरे
२) मर्यादा	२) श्री सुमतिनाथ	७) गुरुभगवंत	७) अजितबला
३) मंगलाराणी	३) वर्ण त्रिक	८) शिष्टाचार	८) विमान
४) महायक्ष	४) शंखनाद	९) सूक्ष्मजीव	९) व्यसन
५) विजय	५) प्रसंशा	१०) मिश्रशब्द	१०) चौदह राज लोक

प्रश्न नं. ५ निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर संख्या में लिखो - १०

१. अनंत काय कितने प्रकार के हैं ?
२. सुषम दुषम नाम का आरा कितने कोडाकोडी सागरोपम प्रमाण का है ?
३. एक युग बराबर कितने वर्ष ?
४. श्री पद्म प्रभुस्वामी के गणधर कितने ?
५. स्थावर जीवों के कुल भेद कितने ?
६. जिनेश्वर परमात्मा के दर्शन करने वाले श्रावक को कितनी त्रिक धारण करनी चाहिये ?
७. बलाबल की विचारण यह मार्गानुसारी का कितनावा गुण है ?
८. श्री अजित नाथ प्रभु ने कितने राजाओं के साथ दीक्षा ली ?
९. एक मुहुर्त बराबर कितने श्वासोश्वास ?
१०. सुषम नाम के आरे में मनुष्यो को कितनी पसलीयां थी ?

प्रश्न नं. ६ नीचे के वाक्य सही (✔) हैं या गलत (×) बताओ - १०

१. सद्गुणी सबके प्रियपात्र बनते हैं, जबकि दुर्गणी पगपग पर नमस्कार पाते हैं ।
२. बादल खारा पानी पीकर मीठा जल बरसाते हैं ।
३. प्रभु के गुणगान पूर्वक विधि सहित चैत्यवंदन करना अग्र पूजा है ।
४. दुषम नाम का पांचवा आरा बयालीस हजार वर्ष प्रमाण होता है ।
५. संसारी जीवो का जीवन अजीव तत्व की सहायता के बिना अधुरा है ।
६. हमारी सावधानी अनेकों को अभयदान दे सकती है ।
७. आलू, कांदा, बीट वगैरह साधारण वनस्पतिकाय में रेशे होते हैं ।
८. श्री सुपार्श्वनाथ प्रभु सम्मेतशिखर पर चारसौ मुनिओं के साथ मोक्ष गये ।
९. सुसंस्कार युक्त अपनी संस्कृति का गुणगान गा रहे हैं ।
१०. अंधकार पुद्गल रुप है और घ्राणेन्द्रिय से ग्राह्य है ।

प्रश्न नं. ७ नीचे के वाक्य किस पृष्ठ पर है वह पृष्ठ नंबर लिखो - १०

१. जिनमंदिर में पान सुपारी आदि खाना ।
२. कर्मानुसार चारों गति में जीव जाते हैं ।
३. बाँस गन्ना वगैरह में स्पष्ट गांठे दिखती हैं ।
४. शरीर बनने के पश्चात जीव धीमे धीमे इन्द्रिय बनाता है ।
५. इस प्रकार के कल्पवृक्षो से इच्छित को प्राप्त करने वाले इस आरे के मनुष्य भी सुखी होते है ।
६. चौदह स्वप्न सूचित प्रभु वैशाख सुदि आठम को जन्मे ।
७. जहाँ बीज ही न हो वहां अंकुर कहाँ से ?
८. मैं प्रभु महावीर का वारसदार हूँ, मुझसे ऐसा पाप होगा ?
९. आंख की पलक झपकने में भी असंख्य समय बीत जाता है ।
१०. जीव अजीव बनता नहीं, अजीव जीव बनता नहीं ।

प्रश्न नं. ८ अपनी भाषा में समझाओ - १५

१. सात शुद्धियां २) प्रसिद्ध देशाचार का पालन ३) प्रत्येक वनस्पति काय के लक्षण
४. दुषम दुषम नाम का छठा आरा ५) श्री संभवनाथ प्रभु की जीवन यात्रा

શત્રુંજય એકેડમી, શ્રી પદ્મપ્રભસ્વામી જૈન મંદિર,
સ્ટેસન રોડ, ચાળીસગામ – ૪૨૪૧૦૧.
જી. જળગામ. મો. ૯૦૨૮૨૪૨૪૮૪